B.A. (Hons) Part-I
Paper-II
Abnormal-Psychology
Dr. Ramendra Kr. Singh
Deptt of Psy.
D.K. College, Dumraon
(Buxar).
ramendrasingh.dkc@gmail.com

असामान्यता के विविध दृष्टिकोण या कसौटियाँ
Different views Points or Criteria about Abnormality.

सामान्यता एवं असामान्यता एक सापेक्ष सम्प्रत्यय (Relative concept) है। अतः ऐसी स्थिति में मनोवैज्ञानिकों द्वारा सामान्यता एवं असामान्यता के स्वरूप को निर्धारित करने के लिये कई तरह के मापदण्डों अथवा दृष्टिकोणों का प्रतिपादन किया है। इन्हें असामान्यता मापन की कसौटियाँ भी कहा जाता है। ऐसे दृष्टिकोण अथवा विचारधाराएँ कुछ पूर्वकल्पनाओं पर आधारित हैं जिन्हें उपयुक्त कसौटियों के माध्यम से समझने का प्रयास किया जाता है। Kisker (1985) ने सभी दृष्टिकोणों अथवा मापदण्डों को दो प्रमुख भागों में बाँटा है:-

(क) वर्णात्मक मापदण्ड (Descriptive model or criteria)
(ख) व्याख्यात्मक मापदण्ड (Explanatory model or criteria)

(क) वर्णात्मक माडल :- इसे सैद्धान्तिक माडल अथवा मापदण्ड भी कहते हैं। इस माडल के अन्तर्गत वैसे दृष्टिकोणों या विचारधाराओं को रखा गया है जो असामान्य व्यवहार की व्याख्या कुछ कसौटियों (criteria) के आधार पर करते हैं कि कौन से व्यवहार असामान्य कहे जायेंगे। इस माडल के तहत आनेवाले criteria या viewpoints में असामान्यता के कारणों की जानकारी नहीं मिल पाती है। किस्कर (KISKER-1985) ने वर्णात्मक मॉडल या मापदण्ड में पाँच तरह के दृष्टिकोणों को रखा है:—

(1) नैतिक कसौटी (Moral criteria) :- यह कसौटी नैतिक मूल्यों पर आधारित है। इसमें व्यक्ति के व्यवहारों को Ethical Standard के आधार पर व्याख्या की जाती है। यदि नैतिक मापदण्ड पर किसी का व्यवहार खरा नहीं उतरता है तो उसे असामान्य व्यवहार कहा जाता है:- "A Person who acts accordance with his ethics, religion, and culture is normal, while, he, who deviates is abnormal."

इस मॉडल की व्याख्या दोषपूर्ण है। नैतिकता एक सापेक्ष सम्प्रत्यय है। एक समाज में जो व्यवहार नैतिक माने जाते हैं दूसरे समाज व संस्कृति में अनैतिक व्यवहार के श्रेणी में आजाते हैं। जैसे मुस्लिम समाज में चचेरी भाई बहन में शादी मान्य है, नैतिक है जबकि हिन्दू समाज में इसे अनैतिक माना जाता है। अतः स्पष्ट होजाता है कि यह मॉडल सीमित एवं एकांगी है।

② सामाजिक मापदण्ड :- इस मापदण्ड का आधार सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानक (Socio-Cultural norm) के अनुकूल होते हैं। उसे सामान्य व्यवहार कहते हैं और जो अनुकूल नहीं हैं उसे असामान्य व्यवहार कहते हैं। सामाजिक सांस्कृतिक मापदण्ड से तात्पर्य उस आधार से है जहाँ एक खास समाज तथा संस्कृति के अधिकांश लोगों द्वारा स्वीकृत होता है। जैसे हमारे देश में Heterosexuality ~~सामान्य~~ को मान्यता प्राप्त है। एक व्यस्क पुरुष तथा एक व्यस्क स्त्री के बीच सामाजिक मान्यता प्राप्त विधि से Sexuality सामान्य व्यवहार है जबकि Homosexuality एक असामान्य व्यवहार है। स्पष्ट हो जाता है कि इस माडेल में समाज के अधिसंख्य लोगों द्वारा अनुमोदित व्यवहार सामान्य व्यवहार है। सामाजिक अनुमोदन नहीं मिलने पर असामान्य

इस विचारधारा अथवा दृष्टिकोण में भी कई दोष हैं जो नैतिक कसौटी वाला दोष विद्यमान है। एक समाज एवं संस्कृति की मान्यताएँ अलग-अलग होती है। अतः समाज एवं संस्कृति बदलने पर असामान्यता का मापदण्ड भी बदल जाता है। दूसरा दोष इस दृष्टिकोण पर यह लगाया जाता है कि एकही समाज में एक व्यवहार एक समय में अमान्य होती है और अनैतिक तथा असामान्य मानी जाती है लेकिन समय बीतने के साथ वही समाज मान्यता प्रदान कर देता है और मान्य हो जाता है। यानि समय के साथ Social Norms बदलते रहते हैं। अतः यह दृष्टिकोण भी दोषपूर्ण है।

③ सांख्यिकीय दृष्टिकोण – उपर्युक्त दोनों माडलों की तुलना में सांख्यिकीय मॉडल अधिक वैज्ञानिक है। इस विचारधारा के अनुसार औसत से नीचे एवं औसत से ऊपर प्रसार रेंज में आनेवाले व्यवहार असामान्य होते हैं। इस कसौटी के आधार पर मानसिक सक्षमता और असामान्यता दोनों को I.Q. के माध्यम से मापने का प्रयास किया गया है। इनके अनुसार जिन लोगों की बुद्धिलब्धि 70 से नीचे होती है वे असामान्यता के शिकार होते हैं। दूसरी तरफ ऐसे लोग जिनकी बुद्धिलब्धि (IQ) 140 से ऊपर होती है; वे भी असामान्य होते हैं। यानि वे सभी व्यवहार जो औसत से विचलित होते हैं असामान्य कहे जाते हैं और जो औसत के अन्दर आते हैं-सामान्य कहे जाते हैं।" इसे Normal Probability Curve द्वारा दर्शाने पर स्पष्ट किया जा सकता है।

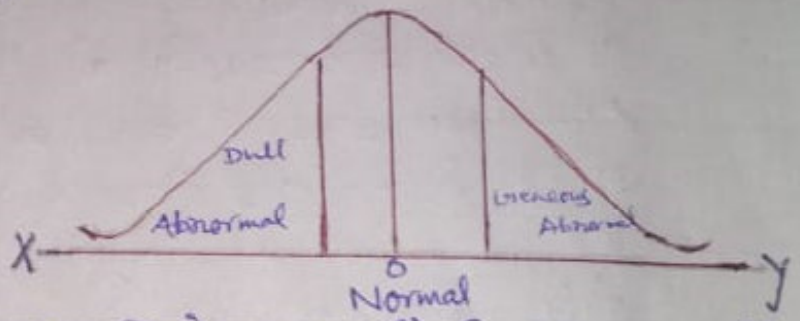

इस विधि की प्रथम विशेषता यह है कि सामान्यता और असामान्यता के बीच के सापेक्ष अन्तर को स्पष्ट कर देती है। यह भी स्पष्ट करने में सक्षम है कि सामान्य और असामान्य में मात्रात्मक (Degree) का अन्तर है। Thus abnormal phenomena differ from the normal in degree not in Kind." (Brown 1960)

लेकिन यह माडल भी दोषरहित नहीं है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति के विशेषताओं एवं गुणों के माप पर आधारित है लेकिन कुछ ऐसे भी गुण है जिन्हें मापने के लिये कोई मापनी नहीं है। दूसरी कमजोरी है कि किसी भी गुण का कम या अधिक होना असामान्यता का सूचक है। पर यह सही नहीं है। इस विचारधारा में एक और बड़ी दोष है। सामान्यता और असामान्यता के बीच सीमा रेखा खींचना बड़ा मुश्किल है। हम यह नहीं कह सकते कि यहाँ से असामान्यता प्रारम्भ होती है और यहाँ से सामान्यता की गणना कहाँ से की जाए।

औसत से कितना विचलन को असामान्य कहा जायेगा। इसका निर्धारण करना कठिन है। इसके अलावे भी यह देखने को मिलता है कि औसत से कम बुद्धि वाले अच्छी तरह वाले अभियोजित हो जाते हैं। जबकि औसत वाले नहीं अभियोजित होकर Mental disorder के शिकार हो जाते हैं।

इस प्रकार इतना तो सही है कि दूसरे कुछ कसौटियों की तुलना में Statistical viewpoints कुछ अधिक वैज्ञानिक है, पर दोषरहित नहीं है। Kisker (1985) के अनुसार:
"Statistical model cannot reflect the suitable complexities of maladaptive behaviour."

④ Normative criteria (आदर्शवादी कसौटी):- यह भी एक दृष्टिकोण है, जो सामान्यता और असामान्यता का निर्धारण आदर्श व्यवहार के आधार पर करता है। इस विमापदण्ड में व्यक्तिविशेष के विचारों एवं व्यवहारों को Idea behaviour से तुलना करके ज्ञात किया जाता है। यदि किसी व्यक्ति का व्यवहार स्थापित आदर्श के विपरीत होता है तो असामान्यता के शिकार है।"
यह दृष्टिकोण भी दोषपूर्ण है। वस्तुतः Moral Model वाली सारी दोषें इस पर भी लागू हो जाती है। एक समाज एवं धर्म के लिए जो व्यवहार आदर्शपरक है दूसरे के लिये भी हो, यह जरुरी नहीं।

⑤ दैहिक दृष्टिकोण:- असामान्यता की व्याख्या के के लिये इस दृष्टिकोण में दैहिक बनावट को आधार बनाया गया है "औसत से अधिक लम्बाई चौड़ाई वाले व्यक्ति तथा औसत से अधिक नाटा व्यक्ति असामान्यता का शिकार होता है। इसी प्रकार गूंगे बहरे अंधे व्यक्ति भी असामान्य व्यवहार वाले होते हैं।" यह दृष्टिकोण भी दोषपूर्ण है क्योंकि बहुत बार यह देखा जाता है कि औसत वतन वाले (Everage physique) वाले व्यक्ति अपने वातावरण में नहीं अभियोजन प्राप्त कर पाते हैं जबकि और अधिक लम्बाई वाला और छोटा व्यक्ति, विकलांग/दिव्यांग व्यक्ति अच्छी तरह से अभियोजित हो जाता है।

(2) मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण :- यह दृष्टिकोण असामान्यता की व्याख्या मनोवैज्ञानिक कारणों के आधार पर करता है। असामान्य व्यवहार मानसिक संघर्षों की उपज होती है ~~तथा~~ या अपअनुकूलित व्यवहारों को सीखने से होती है। इसी अर्थ में इसे कारसन बुचर एवं कोलमैन (1988) Psychosocial model भी कहा है और इसमें चार माडलो को रखा है।-

(a) Psychodynamic model (b) Behaviouristic model (c) Humanistic Model (d) Interpersonal Model.

Psychodynamic Model (मनोगत्यात्मक माडल) अचेतन की ग्रन्थियों को असामान्यता का कारण मानता है। वहीं Behaviouristic Model (व्यवहारवादी माडल) अपअनुकूलित व्यवहारों को सीख लेने से असामान्यता आती है। ये पावलव, वोल्पे एवं स्कीनर के अनुकूलन पर आधारित है। मानवतावादी विचारधारा के अनुसार असामान्य व्यवहार तब पनपता है जब व्यक्ति अपने अन्त:शक्ति (विकासात्मक) को प्राप्त करने में असफल हो जाते हैं, मैसलो, रोजर्स, आलपोर्ट, फ्रिज पर्ल्स के शोधो पर आधारित है, अन्र्तणरस्परिक माडल Cognition Process में गड़बड़ी को असामान्यता का आधार माना गया है। व्यक्ति अपना Cognition Style विकसित कर लेता है और किसी चीज का प्रत्यक्षण अपने अनुसार करता है जो असामान्यता का कारण बन जाता है।

इस प्रकार यह एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है जो असामान्यता की उत्पत्ति में मनोवैज्ञानिक कारणों का तरजीह कुछ अधिक ही देता है जबकि जैविक कारक भी असामान्यता के लिये उत्तरदायी होते हैं। अत: यह दृष्टिकोण भी दोष मुक्त नहीं है।

(3) समायोजन आधारित मापदण्ड :- इस मापदण्ड के अनुसार जो व्यक्ति अपने आँतरिक माँगों एवं वातावरणीय माँगों में समायोजन स्थापित करने में असमर्थ हो जाता है, वे असामान्यता से ग्रस्त हो जाते हैं, उनके व्यवहार असामान्य हो जाते हैं। अर्थात समायोजन में सफल तो सामान्य, समायोजन में असफल तो असामान्य। असामान्य व्यक्ति, चिंता, व्याधि, संघर्ष से ग्रस्त होकर समाज के लिए अहितकर होता है।

(ख) व्याख्यात्मक माडल या मापदण्ड (Explanatory Model, or Criteria) :— किस्कर द्वारा विभाजित दूसरे श्रेणी में के अन्तर्गत वैसे माडलों या दृष्टिकोणों वाले कसौटियों को रखा गया है जो असामान्यता की कारणों के आलोक में व्याख्या करते हैं। अतः जहाँ विवरणात्मक माडलों में असामान्य व्यवहारों की पहचान पर जोर दिया गया है, वहीं व्याख्यात्मक माडलों में असामान्य व्यवहारों के कारणों के आधार पर व्याख्या करने में भी सफलता प्राप्त हो जाती है। दोनों माडलों में एक अन्तर यह भी है कि Descriptive Model असामान्य व्यवहार की सतही माडल है जबकि Explanatory Model अधिक तथ्यपरक व्याख्या करने में सफल है। Kisker (1985) ने व्याख्यात्मक मॉडल के अन्तर्गत तीन प्रमुख दृष्टिकोणों को रखा है।—

व्याधिकीय दृष्टिकोण (Pathological Criterion) :— यह मॉडल असामान्यता की व्याख्या मानसिक विकृतियों को आधार बनाकर करता है; इनके अनुसार जो लोग मानसिक विकारों से ग्रस्त हैं उन्हें असामान्य कहा जायेगा। यह ध्यान देने वाली बात यह है कि इस विचारधारा के पोषक मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि जैविक कारकों (Biological factors) से उत्पन्न असामान्यताएं या मनोविकार यथा दोषपूर्ण स्नायु मंडल, दोषपूर्ण वंशपरम्परा, जैविक रसायन उपद्रव, जीन दोष आदि से उत्पन्न असामान्यताओं को रखा जाता है। यह विचारधारा सामान्यता और असामान्यता में गुणात्मक एवं मात्रात्मक (Qualitative & Quantitative) दोनों प्रकार का अन्तर होता है।

इस माडल को Biological Model भी कहा जाता है। लेकिन असामान्यता केवल Biological factor की देन नहीं है बल्कि Environmental factor और अन्य कारक भी उत्तरदायी है। बहुत लोग ऐसे होते है जो मानसिक रूप से विक्षुब्ध एवं अस्थिर तो होते है; पर मानसिक रोग से पीड़ित नहीं होते है। अतः यह भी विश्वसनीय और वैध कसौटी नहीं है।

अब तक हमने देखा कि कोई भी दृष्टिकोण पूर्णतः वैज्ञानिक एवं दोषमुक्त नहीं है। समालोचनात्मक ढंग से यदि देखा जाए तो समायोजन आधारित मापदण्ड (Adjustment Criteria) सर्वाधिक उपयुक्त है, क्योंकि समायोजन में जैविक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक तीनों कारकों की भूमिका होती है, अतः यह दृष्टिकोण अपने आप में समग्रता लिये हुए है जिससे वैज्ञानिकता के नजदीक है।

01.05.2020

डॉ० रवेन्द्र कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष
मनोविज्ञान विभाग
डी० के० कालेज, डुमरांव
(बक्सर)।